एक कहानी यह भी : स्त्री जीवन की व्यथा–कथा

डॉ पल्लवी प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी,
एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय, चर्चगेट, मुंबई

शोध–सार

"एक कहानी यह भी" में मन्नू भंडारी ने अपने लेखकीय जीवन के साथ–साथ अपने पारिवारिक जीवन और अपनी रचना दृष्टि के निर्माण की भी कहानी कही है। यह उनकी आत्मकथा नहीं है, क्योंकि जीवन के एक कालखंड पर ही मन्नू भंडारी विस्तार से चर्चा करती हैं लेकिन इसमें उनके समय की सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक और राजनीतिक हलचलों को बखूबी महसूस किया जा सकता है जो उनकी रचना–यात्रा में सहायक और प्रेरक रहे। एक प्रसिद्ध लेखक की पत्नी होने के कारण यश और कीर्ति अगर एक ओर स्वाभाविक रूप से मन्नू भंडारी के हिस्से आये तो दूसरी तरफ एक आत्मकेंद्रित और स्वार्थी पति की पत्नी होने के दुःख भी झेलने पड़े.जीवन के कई भयावह और कुरूप झंझावतों के बीच से मन्नूजी गुजरती रहीं, लेकिन उनकी जिजीविषा, धैर्य और रचनात्मक संकल्प अटूट रहें. एक स्त्री के रूप में मन्नू भंडारी की त्रासद जीवन–स्थितियों को जानने का प्रयास प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है.

मुख्य शब्द– *मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, स्त्री–जीवन, आत्मकथा, व्यथा*

मूल आलेख

आधुनिक युग के किसी भी समाज में आज स्त्री–जीवन से जुड़े मुद्दों की उपेक्षा संभव नहीं. स्त्री की संस्कृति, उसका इतिहास, उसकी भावनाएं पुरुष से सर्वथा भिन्न रही हैं, इसके बावजूद स्त्री की इस भिन्नता को हजारों सालों से चली आ रही पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था ने कभी मान्यता नहीं दी. स्त्री के बारे में जो कुछ भी कहा गया, जो कुछ भी लिखा गया, वह पुरुष के द्वारा ही. आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण, शिक्षा के प्रचार–प्रसार और नारीवादी आंदोलनों के प्रभावस्वरूप लेखन के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने पुरुष के वर्चस्व को चुनौती देते हुएस्त्रीलेखन के रूप में एक अलग श्रेणी की मांग की.स्त्रीलेखन के मूल में है स्त्री–दृष्टि, अर्थात स्त्री का खुद की नजर से खुद को देखना. "आत्मकथा", स्त्री लेखन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रिय विधा बन कर उभरी, क्योंकि इसमें स्त्री अपने अनुभूत यथार्थ की अभिव्यक्ति करती है. स्त्रियों की आत्मकथाएं, किसी भी समाज में बवंडर लाने के लिए काफ़ी होती हैं क्योंकि धार्मिक–सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के शोषण का कच्चा चिट्ठा इनमें दर्ज होता है, साथ ही स्त्रियों के संघर्ष और प्रतिकार को भी इनमें वाणी मिलती है. मन्नू भंडारी की "एक कहानी यह भी" एक ऐसी ही आत्मकथात्मककहानी है, जिसमें वे अपने जीवन के अनकहे सच को बयां कर रही हैं,"आज तक मैं दूसरों की जिन्दगी पर आधारित कहानियाँ ही "रचती" आई थी, पर इस बार मैंने अपनी कहानी लिखने की जुर्रत की है. है तो यह जुर्रत ही क्योंकि यह हर कथाकार अपनी रचनाओं में भी दूसरों के बहाने से कहीं न कहीं अपनी जिन्दगी के, अपने अनुभव के टुकड़े ही तो बिखेरता रहता है."इसमें कोई संदेह नहीं कि "एक कहानी यह भी" में मन्नू भंडारी अपने जीवन के एक बड़े हिस्से की कहानी कह रही हैं, जिसमें स्रष्टा भी वही हैं और भोक्ता भी वही. निश्चित रूप से इस दोहरी भूमिका का निर्वहन आसान नहीं होता, अगर टी.एस.इलियट के द्रष्टा और भोक्ता के सिद्धांत को ध्यान में रखें तो, इसलिएलिखनेवालीमन्नू और जीनेवालीमन्नू के बीच उपयुक्त फासले हैं या नहीं, इसका निर्णय वे

अपने पाठकों पर छोड़ती हैं.लेखकीय तटस्थता बनाये रखने का हर संभव प्रयास वे करती हैं,"... पर अपनी कहानी लिखते समय सबसे पहले मुझे अपनी कल्पना के पर ही क़तर कर एक ओर सरका देने पड़े, क्योंकि यहाँ तो निमित्त भी मैं ही थी और लक्ष्य भी मैं ही." मन्नू भंडारी इसीलिए यह आग्रह रखती हैं कि यह शुद्ध उनकी कहानी है जिसमें किसी कांट–छांट की आवश्यकता नहीं. उनकी यह आत्मकथात्मककहानी न सिर्फ उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन, बल्कि उनके समय और परिवेश की भी यथार्थ तस्वीर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है. डॉ मैनेजर पाण्डेय के अनुसार, "अच्छी आत्मकथा लेखक की आत्मा का आईना होती है." और निश्चित रूप से इस मन्नू भंडारी भी अपनी इस आत्मकथा के माध्यम से स्वयं को पहचानने की कोशिश करती हैं. एक लम्बे समय तक कलम ना उठा पाने की कसक मन्नू भंडारी को सालती रही है, इसीलिए "एक कहानी यह भी" लिखते हुए उन्हें एक आशा थी कि अपने मन के आईने को पाठकों के सम्मुख खोल कर रख देने के बाद शायद उनके लेखन को फिर से गति मिलेगी, अँगुलियों की दोस्ती फिर से कागज़ और कलम से होगी. वे कहती हैं, "कौन जाने इन ठूंठ जैसी टहनियों में भी कुछ अंकुरित होने की प्रक्रिया शुरू हो जाए"।

इस आत्मकथा की शुरुआत में ही मन्नू भंडारी अपने बचपन के समय को वर्णित करने के साथ ही देश के स्वाधीनता संग्राम की झलक भी दिखलाती हैं, जिसमें क्रमश: राजेन्द्र यादव और उनके दाम्पत्य सम्बन्ध, मन्नू भंडारी की रचना दृ ष्टि के निर्माण के उत्तरदायी कारक,लेखकीय राजनीति और स्त्री जीवन की त्रासदी जैसे विषयों का समावेश हो जाता है। मन्नू भंडारी जिस सामाजिक–राजनीतिक और आर्थिक परिवेश से परिचित होती हैं वह क्रांति का परिवेश था जहाँ हर तरफ मुक्ति की छटपटाहट गूंज रही थी. घर और बाहर दोनों दो दुनिया थे, जिससे तालमेल बिठाना उनके लिए कठिन था.पिता अंतर्विरोधों से भरे हुए थे जो एक तरफ़ तो मन्नू भंडारी को चूल्हे–चौके की बजाय लिखने–पढने और राजनीति में रूचि रखने के लिए प्रोत्साहित करते थे तो दूसरी तरफ़ बेटी के द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन के जुलूसों में भाग लेना या विद्यार्थी समूह के साथ स्कूल–कॉलेज मेंहडताल करवाने के कारनामों से गहरी असहमति रखते थे. मन्नू भंडारी कीआत्मकथा इन्हीं अंतर्विरोधों और टकराहटों के बीच से अपना रास्ता बनाती है.एक आर्यसमाजी परिवार में जन्मी मन्नू जाति और धर्म जैसे सामाजिक बन्धनों का निषेध करती हैं, जब विवाह का प्रश्न सामने आता है. "मन्नू भंडारी की जिन्दगी में सशक्तीकरण का क्षण वह केन्द्रीय निर्णय था जब उन्होंने बिरादरी से बाहर एक साहित्यकार से विवाह करने का फैसला किया." मन्नू भंडारी यह सोचती हैं कि लेखक ही उनके विचारों या भावों से तालमेल बिठा सकता है, इसलिए परिवार, जाति और समाज की परवाह ना कर वे राजेन्द्र यादव से विवाह का निर्णय लेती हैं जो उस समय के हिसाब से निश्चित ही एक प्रगतिशील निर्णय था. विवाह के कुछ समय बाद ही मन्नू भंडारी को अहसास हो जाता है कि उनके और राजेन्द्र यादव के बीच ना तो विचारों का सामंजस्य है ना ही भावों का, लेकिन फिर भी वह विवाह के बंधन को ढोती रहती हैं ताकि परिवार, जाति और समाज आदि के विरुद्ध जाकर लिए गए उनके फैसले को कोई गलत ना ठहरा दे. विवाह के समय ही राजेन्द्र यादव ने समानांतर जिन्दगी काफ़लसफ़ा उनके हाथों में थमा दिया था, " देखो छत जरूर हमारी एक होगी, लेकिन जिंदगियां अपना–अपनी होंगी– बिना एक दूसरे की ज़िंदगी में हस्तक्षेप किए, बिल्कुंलस्वातंत्र, मुक्तख और अलग." इसफलसफे के तहत वे पूर्व प्रेमिका मीता से भी अपने रिश्ते को खत्म नहीं करते, घर–परिवार की जिम्मेदारियों से खुद को मुक्त रखते हैं तथा न तो एक पति के रूप में अपने दायित्वों को पूरा करते हैं ना ही एक पिता के रूप में. राजेन्द्र यादव के समानांतर जीवन के फलसफे ने मन्नू भंडारी केलेखकीय व्यक्तित्व के साथ–साथ पत्नी रूप को भी गहरे तक आहत किया था. कई बार वे विवाह के इस बंधन को तोड़ कर अपने लिए एक सुकून भरे जीवन की तलाश के रास्ते तलाशती हैं, लेकिन फिर कदम खुद–ब–खुद वापस मुड़ जाते हैं, "तब बार–बार

मन में यही उठता था कि क्यों नहीं मैं ही इन समानांतर जिंदगियों की छतें भी समानांतर करके पहले वाली जिन्दगी में लौट जाऊं?" बिटियाटिंकू के पालन पोषण में भीराजेन्द्र यादव का अनुत्साहित रहनामन्नूजी के लिए पीड़ादायक है. यही कारण है कि टिंकू को लम्बे अरसे तक कभी मन्नू भंडारी के दिल्ली स्थित घर तो कभी मौसी सुशीला के कलकत्ते स्थित घर में समय गुजारना पड़ा, क्योंकि राजेन्द्र यादव घर में रह कर बेटी की देखभाल की जिम्मेदारी इसलिए नहीं लेना चाहते थे कि इससे उनका मेल इगोहर्ट हो जाता. " उनके मन की असली गांठ तो यह थी कि मेरे कालेज जाने के पीछे अगर उन्होंने बच्ची को देखा तो उसकी आया बनकर रह जाएंगे और उनका अहं उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देता था। बार–बार कलकत्तेभेजे जाने सेटिंकूके बाल मन में दो मांओं की छवि अंकित हो जाती है,वह सुशीला को ही अपनी असली मां मान लेती है,जिससे मन्नू भंडारी के मातृत्व को
गहरी चोट पहुँचती है. घर चलाने की सारी जिम्मेवारी तथा बेटी के लालन–पालन की सारी व्यवस्था मन्नू भंडारी के कन्धों पर डाल राजेन्द्र यादव कई बार प्रेमिका मीता के साथ पहाड़ों पर घूमने जाने का प्रोग्राम बना लेते हैं. इस कहानी में मन्नू भंडारी के अपने जीवन के समानांतर ही चलती है एक त्रिकोणीय प्रेम कहानी, " "एक कहानी यह भी" में मन्नू, राजेन्द्र यादव, मीता का त्रिकोण है. ये प्रेमिका, इच्छुक, अनिच्छुक प्रेमी और प्रेमहीन विवाह के त्रिकोण भी हैं."(६)मन्नू भंडारी सब कुछ जानते हुए भी अगर समानांतर जीवन के राजेन्द्र यादव के तर्क को झेलते चले जाती हैं तो उसका सम्बन्ध कहीं न कहीं मध्यमवर्गीय भारतीय नारी की उस तयशुदा नियति से है जिसमें परिवार को बचाए रखने के लिए उसे अपने अस्तित्व की आहुति देनी पड़ती है. टिंकू की नियति,"आपका बंटी" उपन्यास के बंटी की तरह ना हो, इसी प्रयास के क्रम में मन्नू भंडारी अपने जीवन को होम कर देती हैं, "पर जब भी मैं अलग होने की बात सोचती, टिंकू का चेहरा बंटी के चेहरे में जा मिलता और मेरा सारा सोच वहीं ध्वबस्त हो जाता।" अपने लेखकीय और पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बिठाने के क्रम में मन्नू भंडारी निरंतर पिसती चली जाती हैं क्योंकि लेखक पति से उन्हें ना तो वांछित आर्थिक सहयोग मिलता है ना ही किसी प्रकार का पारिवारिक या लेखकीय सहयोग और यह मानसिक टूटन कहीं न कहीं उनके लेखन में पारिवारिक –सामाजिक चहारदीवारी अर्थात ब्रैकेट्स के माध्यम से परिलक्षित होती है. डॉ मैनेजर पाण्डेय के अनुसार, " मन्नूब्रैकेट्स के भीतर अपने मन का सच लिखती हैं और ब्रैकेट्स के बाहर दिमाग का सच."

पितृसत्तात्मकसामाजिक व्यवस्था ने सदियों से स्त्री की अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाने का वप्रयास किया है तथा पुरुष की रचनात्मक श्रेष्ठता को स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया है. यह स्थिति सिर्फ भारत की ही नहीं, पश्चिमी देशों की भी रही है.लेखन कार्य को स्त्रियों के लिए कितना कठिन और दुष्कर बनाया जाता है समाज के द्वारा, इसका खुलासा वर्जीनियावूल्फ की पुस्तक "अ रूम ऑफ़वन्सओन" से होता है, जिसमें वह बताती हैं कि अगर शेक्सपीयर की उसी के सामान अगर कोई प्रतिभावान बहन होती तो उसका उस युग में क्या हश्र हुआ होता. एक स्त्री रचनाकार होने के कारण हिंदी आलोचना की पुंसवादी मानसिकता से मन्नू भंडारी बखूबी वाकिफ़ रही हैं और यही कारण है कि अपने लेखन को महिला लेखन की अलग श्रेणी में रखे जाने के वे विरुद्ध हैं. अपने लेखन में उन्होंने स्त्री प्रश्नों को बड़ी शिद्दत से उठाया जरूर है लेकिन लेखन की विषयवस्तु को सिर्फ स्त्री जीवन तक सीमित नहीं रखा है, बल्कि समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले विषयों को अपनी रचनाओं में समावेशित किया है. मन्नू भंडारी के जीवन और लेखन में कोई फांक नहीं है, उन्होंने जो जिया, जो महसूस किया, और जो देखा, वही उनकी रचनाशीलता के बीजसूत्रबनें. डॉ मैनेजर पाण्डेय के अनुसार, "मन्नू की इस आत्मकथा में उनकी कहानियों, उपन्यासों,नाट्यरूपान्तरों और पटकथाओं आदि की प्रेरणाओं और रचने की प्रक्रियाओं से सम्बंधित महत्वपूर्ण संकेत और सूत्र

भरे पड़े हैं जिनकी मदद से उनकी रचनाशीलता की बेहतर समझ बनती है."

एक समर्पित पत्नी के रूप में मन्नू भंडारी ने पति राजेंद्र यादव से भी गहरे,एकनिष्ठ प्रेम की उम्मीद रखी थी तथा लेखक पति का सानिध्य उनके लेखकीय जीवन को सुगम बना देगा ऐसा भी सोचा था लेकिन हकीकत में होता कुछ और ही है.विवाह के तुरंत बाद ही मन्नू भंडारी को पता चल जाता है कि त्याग और समर्पण जैसे शब्दसिर्फ़ उनके लिए ही हैं, पति का इनसे कोई वास्ता नहीं. लेखक पति के साथ ने मन्नू जी को एक ओर साहित्यिक रूप से समृद्ध तो किया लेकिन वहीँ दूसरी तरफ़ लेखकीय सहयोग के नाम पर राजेन्द्र यादव उनके अधूरे उपन्यास की पूरी थीम को मांग कर "एक इंच मुस्कान" उपन्यास के लिए बेझिझक होकर इस्तेमाल करने से बाज नहीं आते. बेटी या पत्नी के बीमार होने पर भी राजेन्द्र यादव उनकी देखभाल करने की बजाय उन्हें उनके हाल पर छोड़ कर खुद दोस्तों के साथ बैठकी सजाने चले जाते हैं. यह क्रम अक्सर ही चलता रहता है और तब मन्नू भंडारी एक पत्नी के रूप में पति राजेन्द्र यादव से लगातार दूर होते चली जाती हैं लेकिन एक लेखक के रूप में उनका जुड़ाव लम्बे अरसे तक बना रहता है, " राजेन्द्र की हरकतें मुझे तोड़ती थीं तो मेरा लेखन उससे मिलने वाला यश मुझे जोड़ देता था." मन्नू भंडारी यह मानती हैं कि राजेन्द्र यादव के साथ एक लम्बा कालखंड गुजारने के पीछे उनका लेखन और लगाव ही मूल कारण थे लेकिन जैसे–जैसे मन्नू जी का लेखक रूप नेपथ्य में चला गया और आहत पत्नी रूप सामने उभर कर आ गया, तब राजेन्द्र यादव के साथ सम्बन्धों का निर्वहन उनके लिए संभव नहीं रहा. मन्नू भंडारी के अनुसार" इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे लेखकीय व्यक्तित्व को राजेन्द्र ने जरूर प्रेरित और प्रोत्साहित किया, ...लेकिन मेरे व्यक्तित्व का पत्नी रूप? इस पर राजेन्द्र निरंतर जो और जैसे प्रहार करते रहे, उसका परिणाम तो मेरे लेखक ने ही भोगा." (१४) मन्नू भंडारी जिस वक्त राजेन्द्र यादव से अपने लगाव को खत्म कर पाती हैं, उनके भीतर की दबी–सहमी स्त्री मुखर हो उठती है, जो अपनी अस्मिता पर निरंतर प्रहार को सहन नहीं कर पाती और जिसकी परिणति होती है मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव के अलगाव के रूप में. राजेन्द्र यादव से अलग होने के बाद के बारह वर्षों में "एक कहानी यह भी" आकार ले पाई, जिसमें एक स्त्री के रूप में वैवाहिक जीवन की जिन त्रासद स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ा, उसका जीवंत चित्रण है.

निष्कर्ष

"एक कहानी यह भी" में मन्नू भंडारी ने बहुत ईमानदारी और बेबाकी से एक बेटी, एक पत्नी और एक मां के रूप में अपने पारिवारिक जीवन तथा एक छात्रा, एक शिक्षिका और एक लेखिका के रूप में अपने सामाजिक जीवन का आकलन करते हुए स्त्री जीवन के संघर्ष के विभिन्न आयामों को उद्घाटित किया है. अपनी कमजोरियों पर मन्नू भंडारी किसी किस्म का कोई पर्दा नहीं डालतीं, ना ही किसी किस्म का कोई शहीदाना अंदाज है उनके लेखन का. इस आत्मकथात्मककहानी के माध्यम से एक मध्यमवर्गीय, शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री के जीवन–संघर्ष का यथार्थ चित्रण करने में मन्नू भंडारी पूर्णतरू सक्षम रही हैं.

सन्दर्भ सूची

1. भंडारी, मन्नू, एक कहानी यह भी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, २००८, पृष्ठ– ७
2. वही, पृष्ठ– ७
3. पाण्डेय,मैनेजर, हंस, वर्ष २५, अंक ८, मार्च २०१०, पृष्ठ ५२
4. वही, पृष्ठ–१५
5. दुबे, अभय कुमार, तद्भव, अंक १६, जुलाई, २००७, पृष्ठ– २१
6. वही, पृष्ठ–५६
7. भंडारी, मन्नू, एक कहानी यह भी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं– २००८, पृष्ठ–६०
8. वही,पृष्ठ–६५
9. दुबे, अभय कुमार, तद्भव, अंक–१६, जुलाई २००७, पृष्ठ–२५

10. भंडारी, मन्नू, एक कहानी यह भी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं– २००८, पृष्ठ–११४
11. पाण्डेय, मैनेजर, हंस, अंक ८, मार्च, २०१०, पृष्ठ –५४
12. वही, पृष्ठ दृ ५५
13. भंडारी, मन्नू, एक कहानी यह भी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं– २००८, पृष्ठ–२२३